"In croce philosophy art is nothing but intuition or the expression (within the mind) of impressions The mind is always forming of half-forming intuitions..."

क्रोचे इस मत से सहमत नहीं है कि कला के लिए विशिष्ट प्रकार के स्पष्ट प्रकाश अवश्य होते हैं अथवा स्वयं प्रकाश में असाधारण तीव्रता होने पर ही कला का सूत्रपात होता है। इस प्रकार वह स्वयं प्रकाशों में विशेष नहीं मानता और इसका विचार है कि यदि हमारी कल्पना प्रखर है तथा हमारा सहज ज्ञान सबल है तभी हम उच्च कोटि के कवि, चित्रकार या मूर्तिकार बन सकते हैं। क्रोचे कला को एक मानसिक प्रक्रिया मानता है —"The intuition becomes art when the spirit persist in it, intent only upon the activity of perfect expression... इस प्रकार कलाकार अपनी सहानुभूति को पूर्ण अभिव्यक्ति देने में प्रयत्नशील रहता है और जब कलाकार अपने मानस से अनुभूति के लिए शब्द प्राप्त कर लेता है तथा किसी आकृति या मूर्ति की धारणा निश्चित एवं स्पष्ट हो जाती है, बस तभी यह समझना चाहिए कि अभिव्यंजना उत्पन्न हो गई। क्रोचे के अनुसार यद्यपि सामान्य और विशिष्ट, सभी में कला की क्षमता होती है परन्तु सबकी सहजानुभूति में भेद होता है और कलाकार में अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा निम्नलिखित विशेषताएँ रही है—(1) सजग इच्छा-शक्ति (2) कला के माध्यम का ज्ञान (3) चिन्तन और (4) कल्पना-शक्ति।

(3) **विषय और शैली (Matter and style)**—वस्तुतः अभिव्यंजना का अस्तित्व रूप (Form) या विषय पर आधारित है और कलाकार अपनी भावनाओं को ही मूर्त रूप देता है तथा तत्व या वस्तु का काव्य में, भाव या विचार तत्व से ही अभिप्राय है। कुछ विचारक इस रूप विधान को एक विशिष्ट विधि या शैली मानते हैं परन्तु विषय और शैली अभिन्न हैं। क्रोचे के अनुसार कलाकार शैली के द्वारा विषय को प्रस्तुत नहीं करता; बल्कि विषय ही शैली के रूप में अवतरित होता है।

(4) **कल्पना और सौन्दर्य (Imagination and Beauty)** क्रोचे कलाकार के लिए कल्पना को भी अनिवार्य मानता है क्योंकि इसी के द्वारा वह मूर्तिविधान सौन्दर्य-बोध करता है। क्रोचे कल्पना को स्वतन्त्रता बतलाता है और उसका विचार है कि कल्पना न तो पदार्थों का वर्गीकरण करती है और न उन्हें गुणों द्वारा विशिष्ट बनाती है तथा न ही उनका लक्षण प्रस्तुत करती है क्योंकि वह तो उनकी अनुभूति करती है और उन्हें हमारे सामने मूर्त रूप में अभिव्यक्ति करती है लेकिन इस अभिव्यक्ति में सौन्दर्य होना अनिवार्य है। इस प्रकार क्रोचे कला में सौन्दर्य तत्व का अधिवास स्वीकार करता है और उसका यही कहना है कि सफल अभिव्यक्ति में ही सौन्दर्य निवास करता है तथा यदि अभिव्यक्ति सफल नहीं है, तो वह अभिव्यक्ति ही नहीं है—

Beauty is successful expression, or better expression and nothing more because expression when it is not successful, is not expression.

क्रोचे के उक्त विचारों को यहाँ सार-रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(1) कला, अभिव्यंजना एवं सहानुभूति को पर्यायवाची ही समझना चाहिए।

(2) कला आध्यात्मिक प्रक्रिया है और अभिव्यंजना बाह्य नहीं, मानसिक होती है।

(3) कला, वस्तु और शैली पृथक्-पृथक् नहीं; अभिन्न हैं तथा कला सृजन की प्रक्रिया की चार स्थितियाँ हैं—(अ) प्रभावों का अस्पष्ट संवेदन, (ब) संवेदनों की आत्मा की कल्पना-शक्ति द्वारा आंतरिक अन्विति, (स) सफल अभिव्यंजना एवं तज्जन्य आनन्दभूति और (द) आंतरिक अभिव्यंजना का शब्द, रंग, रेखा आदि में मूर्तिकरण।

(4) कलाकार के लिए सुन्दर और असुन्दर का कोई भेद नहीं यदि वह कलाकार के मन पर बिम्ब अंकित करने में समर्थ है।

(5) रूप (Form) ही सौन्दर्य का आधार है, जो अभिव्यंजना का मूल है और कल्पना का अनिवार्य तत्व है।

क्रोचे के अभिव्यंजनावाद पर आक्षेप

क्रोचे के अभिव्यंजनावाद ने भले ही साहित्य जगत् को बहुत अधिक प्रभावित किया हो पर उसकी चर्चा अवश्य बहुत अधिक हुई और उसकी प्रशंसा करने की अपेक्षा आलोचना ही अधिक परिणाम में हुई। इस प्रकार क्रोचे के अभिव्यंजनावाद पर निम्नलिखित आक्षेप प्रमुख रूप से किये जाते हैं—

(1) क्रोचे बाह्य अभिव्यंजना को अनावश्यक मानकर कलाकार को ऐसी स्वच्छन्दता प्रदान करता है जो अराजकता एवं अव्यवस्था में परिणत हो सकती है।

(2) सामान्यतया क्रोचे की मान्यताएँ अमूर्त सौन्दर्य-बोध के जगत का अन्वेषण करती हैं कला का क्षेत्र मूर्त है

(3) क्रोचे के सदृश किसी बौद्धिकता रहित सहज ज्ञान या स्वयं प्रकाश ज्ञान की कल्पना नहीं की जा सकती।

(4) क्रोचे कला को संवेदन मात्र नहीं मानता है और उसके लिए कला का अस्तित्व केवल उसी क्षण तक रहता है, जब तक कि कलाकार लेखनी, तूलिका या छैनी पकड़ता, केवल मानस प्रक्रिया में रत रहता है।

(5) क्रोचे की भाँति रूप, स्थान, काल एवं धारण से रहित किसी रूप की कल्पना भी मानव मन के लिए सम्भव नहीं है।

(6) कोचे ने स्पष्टतया जीवन के प्रति उपेक्षा प्रकट की है।

(7) क्रोचे ने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि कलाकार का काम दूसरे तक अपने भावों को पहुँचाना है और कलात्मक कृति द्वारा दूसरों पर प्रभाव भी पड़ता है।

निष्कर्ष

यद्यपि क्रोचे के अभिव्यंजनवाद की कटु आलोचना हुई है और उसके गुणों का उल्लेख करने की अपेक्षा दोषों को अधिक ढूँढ़ा गया है पर वास्तविकता यही है कि क्रोचे के अभिव्यंजनावाद का पाश्चात्य आलोचना पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और अमेरिकन विचारक स्पिनगार्न ने जिस 'नई आलोचना' के सम्बन्ध में विस्तार से

Scanned with CamScanner

मिलता है वह मुख्यतया क्रोचे की ही देन है। साथ ही इटली और इंग्लैंड के नए आलोचकों पर भी क्रोचे का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार क्रोचे के अभि[illegible] व्यंजनावाद को महत्वपूर्ण सिद्धान्त मानना ही युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

अस्तित्ववाद

Scanned with CamScanner